वेदों में किरण विज्ञान

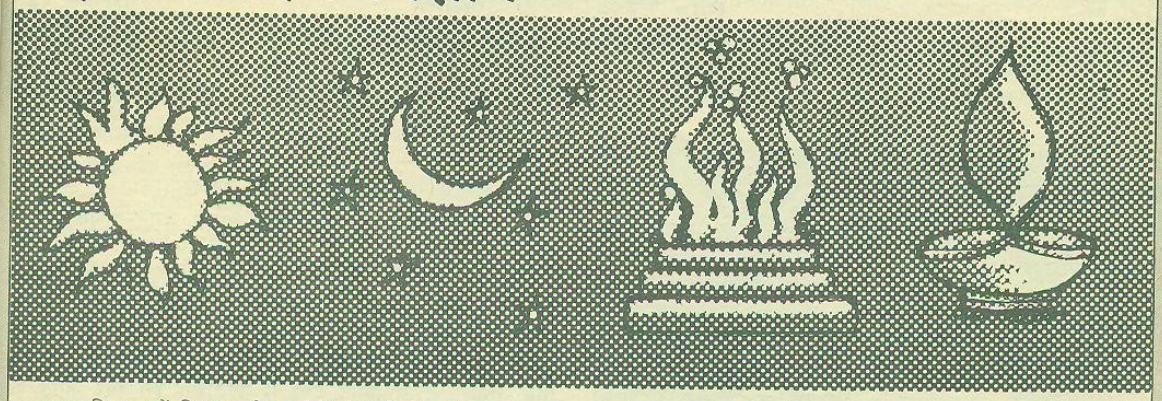

आज विज्ञान में नित्य नवीन खोजे हो रही हैं और इसके द्वारा मनुष्य प्रकृति की नयी से नयी जानकारी प्राप्त करता जा रहा है। यह मनुष्य के लिए गर्व की ही चीज है किन्तु भारतीय संस्कृत का प्राचीनतम ज्ञान भी कम गर्वोन्नति वाला नहीं है। आज आधुनिक विज्ञान में किरण विज्ञान को अति आधुनिक विज्ञान समझा जा रहा है। किन्तु हमारे वेदों के अन्दर सैकड़ों तरह की किरणों का वर्णन आया हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती कुछ वेदों का भाष्य करके हमारे लिए वेद विद्याओं का असीम द्वार खोल गये हैं किन्तु हमारे अभाग्य से उनका जीवन दीर्घायु न हो पाया जिसके कारण हम अभी तक उस ज्ञान से वंचित हैं किन्तु वह आर्य समाज के नियमों के द्वारा बतला गये हैं कि वेदों के अन्दर असीम ज्ञान मौजूद है। यह बडे दुःख का विषय है कि आज का आर्य समाज महर्षि दयानन्द के द्वारा गुणगान के पश्चात् भी आज तक किसी भी वेद विद्या को उजागर नहीं कर पाया।

हमने आर्य समाज के नियमों से प्रेरित होकर वेद भाष्यों का अध्ययन किया उसमें से अध्ययन उपरान्त निष्कर्ष यही निकला है कि चारों वेद एक पूर्ण वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं तथा अनेक विंद्याओं से निहित हैं। विद्याओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसमें से एक केतना नामक किरण के कुछ संकलन यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। कृपया इसके ऊपर शोधकार्य करके विद्वानों को इसे विश्व के वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाय जिससे हमारे ज्ञान के विषय में विश्व के मनुष्यों को कुछ ज्ञान प्राप्त हो सके। प्रस्कण्व ऋषि ने सामवेद पूर्वाचिक मंत्र सं. ३१, "उदु त्यं जातवेदसं" मंत्र में सूर्य की केतवा नामक किरणों के द्वारा उत्पन्न किये हुए समस्त पदार्थों को देखने और दिखलाने और प्राप्त करने वाले सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसंग ऋग्वेद १/५०/१ से ५ वाले वर्ग में विस्तारिक किया हुआ है। तथा यजुर्वेद ७/४१/४९ वाले अनुवाक में भी इस विद्या विशेष की क्रिया आदि पर प्रकाश डाला गया है। इसके अन्दर हमारे प्राचीन पुरातन साहित्य में गति की १२२ तरह के सिद्धान्त दिये हैं। इस विद्या के साथ गति की १२२ किस्मों में से "बहते" नामक क्रिया को जोड़ा गया है। यह प्रकरण यजुर्वेद ८/४१ वाले अनुवाक में भी विस्तृत है। अथर्ववेद १३/२/१६ एवं २०/४१/१३ वाले प्रकरणों में भी यह विस्तृत किया हुआ है। त्रै.सं. १/२/८/२ और १/४/४३/१ द्वारा इस प्रसंग को वेदों के अन्य स्थलों से जोड़ा गया है और निरुक्त ६२/१२ द्वारा भी यह निर्देशित है। यजुर्वेद ३३/३० से लेकर ४३ वाले अनुवाक में भी सूर्य विज्ञान के साथ किरण विज्ञान को जोड़कर विस्तारित किया गया है।

त्रिशिराः ऋषि ने अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द के माध्यम से अन्तरिक्ष और द्य लोक में व्यापक होने वाले अनेक सिद्धान्त दिये हुए हैं। और यह प्रकरण ऋग्वेद १०/८/६ से ५ वाले प्रकरण में विस्तार किया हुआ है। अथर्ववेद १८/३/६५ वाले प्रसंग से भी इसका सम्बन्ध है। त्रै. आ. ६/३/१ द्वारा भी इसे वेदों के अन्य स्थलों से जोड़ा गया है। सामवेद ८८६ से ८८ वाले त्रिक में अकृष्टा भाषाः नामक ऋषि ने सोम देवता के जगती छन्द द्वारा किरण विज्ञान के पदार्थों के साथ होने वाले विभिन्न कर्मों पर प्रकाश डाला है। यह प्रकरण ऋग्वेद ९/८६/४ वाले वर्ग में और अधिक विस्तारित किया गया है।

कश्यपः ऋषि ने सोम देवता के गायत्री द्वारा सामवेद ९५८ से ९६० वाले त्रिक में इस विज्ञान पर और अधिक प्रकाश डाला गया है। यह प्रकरण ९/६४/१ वाले वर्ग में ही है। और सूर्य विज्ञान के साथ समन्वित किया गया है। ऋग्वेद १/६/१ से ५ मधुछन्दाः ऋषि ने इन्द्र देवता और मरुत इन्द्रश्य देवता के गायत्री द्वारा १/६/१ से ५ वाले वर्ग में सूर्य किरणों के माध्यम से पदार्थ ज्ञान को संयोग-वियोग करने वाले सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण सामवेद १४६८ से ७० वाले त्रिक, अथर्ववेद २०/२६/४, २०/४१/२१, २०/६९/९ वाले प्रसंग एवं यजुर्वेद २३/५ और २९/३७ वाले अनुवाकों के द्वारा एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। इस प्रसंग को त्रै.सं. ७/४/२०/१ एक-दूसरे जोड़ते हैं।

ऋग्वेद १/२७/११ से १३, आजीगर्ति शुनःशेप कृत्रिमो वैश्वामित्रों देवराति ऋषि ने वरुणश्व देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा सूर्य और केतवा किरणों के साथ विभिन्न पदार्थों के साथ होनेवाले कर्म, गुण, क्रिया के भिन्न-भिन्न सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण यजुर्वेद ८/२३ अनुवाक, त्रै.सं. १/४/४५/१, त्रै.आ. १/११/२, निरुक्त ३/२० द्वारा निर्देशित है। १/२७/११ से १३ वाले प्रसंग में अग्नि एवं विश्वोदेवा देवता में भी इसका कुछ वर्णन मिलता है। यह प्रसंग सामवेद १६६४ से ६५ वाले त्रिक तथा निरुक्त ३/२० द्वारा एक-दूसरे से सम्बन्धित है।

छैलबिहारी लाल गोयल